जैनेन्द्र के उपन्यास साहित्य में नारी की राजनीतिक समस्या

डॉ. उपेन्द्र नाथ दूबे
असिस्टेंट प्रोफेसर (हिंदी)
श्री महंथ रामाश्रय दास पी0जी0 कॉलेज
भुड़कुड़ा, गाजीपुर

सारांश-

जैनेन्द्र जी अपने उपन्यास साहित्य में अपना स्वतंत्र अस्तित्व लेकर उपस्थित हुए हैं। एक चिन्तक के रूप में जीवन की मर्मस्पर्शी मूल्यों की व्याख्या करता उनका मन जीवन के तथ्यों को उखाड़कर पाठक के सम्मुख रख देता है जिसे गाँधीवाद की भूमि पर जांचा-परखा जा सकने की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। उपन्यासकार के रूप में जैनेन्द्र जी का जो रूप है वह भारतीय राजनीति के अत्यन्त निकट का एवं अंतरंगी है।

जैनेन्द्र जी बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा प्राप्त करते समय ही गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन (सन् १९२१) में कूद पड़े थे। यहीं से उनके राजनीतिक जीवन का प्रारम्भ माना जा सकता है-''प्रारम्भिक दिनों में लाला लाजपत राय के (तिलक स्कूल आफ पालिटिक्स) स्कूल में रहे। इन्हीं दिनों वे श्री माखनलाल चतुर्वेदी और श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान के सम्पर्क में आये और उन्हीं के साथ उन्होंने विलासपुर में कांग्रेस के तत्वावधान में राष्ट्रीय कार्यों में भाग लिया। सन् १९२३ में भगवानदीन जी के आह्वान पर वे नागपुर के सुप्रसिद्ध झण्डा सत्याग्रह में संवाददाता के रूप में भाग लेकर जेल गये। पर सरकार के साथ सरदार पटेल के समझौते के कारण मुक्त कर दिये गये।'' तत्कालीन समय में जैनेन्द्र कांग्रेस एवं गांधी जी से प्रभावित हुए और उनके प्रति निष्ठा बढ़ती ही गई। जिसके परिणाम स्वरूप वे जेल भी गये थे, बल्कि गांधी जी के सिद्धान्तों को अपने प्रत्यक्ष जीवन में साकार करने के साधन जुटाने में जुट गये थे। डॉ० राजेन्द्र मोहन भटनागर

के शब्दों में-''जैनेन्द्र जी गाँधी युग के हैं। उनकी उनमें गहरी आस्था है। उन्होंने साधारण वस्त्रों में उस महात्मा को देखा था जो कुटिया में रहकर बिना सत्ता-फौज के इस देश की आत्मा बना निर्द्वन्द्व घूमता था। वह राजनीति में था, धर्म में था। जैनेन्द्र ने जो देखा जिसके वे आज भी साक्षी हैं। कहीं से कैसी आंधी उठे, कैसे तूफान चले लेकिन वे अपनी जगह डिग नहीं सकते। उन्होंने महात्मा के बाद राजनीति को टूटते और मिटते हुए देखा है।'' सन् १९३२ के आन्दोलन के उपरान्त जैनेन्द्र ने फिर राजनीतिक आन्दोलन में भाग नहीं लिया। इसका कारण जैनेन्द्र अपने नेतृत्व की कमजोरी बताते हैं। जैनेन्द्र जी ने अपने राजनीतिक जीवन के बारह वर्षों में कांग्रेस एवं क्रांतिकारियों के जीवन को करीब से देखा-परखा था। गांधी जी और कांग्रेस के प्रति निष्ठावान होने के कारण उनका स्वतंत्र महत्व है। जैनेन्द्र जी हिंसा पर अहिंसा की विजय और प्रेम को ही साहित्य का श्रेय मानते हैं। गाँधी जी से प्रभावित हुए भी उनके उपन्यासों में राजनीतिक घटनाओं का अभाव दृष्टिगत होता है। जिसके सम्बन्ध में जैनेन्द्र का विचार द्रष्टव्य है- ''मेरे ख्याल में न व्यक्ति चाहिए, न टाइप न नीति चाहिए, न राजनीति न सुधार न स्वराज्य। उससे तो प्रेम की सघन व्यथा की मांग ही हो सकती है और वह प्रेम इस या उसमें नहीं है बल्कि इस-उस की परस्परता में ही है।

उपन्यास ही नहीं साहित्य की परिभाषा के रूप में भी

उनका कथन है-''मनुष्य के हृदय की अभिव्यक्ति जो इस आत्मैक्य की अनुभूति में लिपिबद्ध होती है, साहित्य है। इस प्रकार हम देखते हैं कि जैनेन्द्र प्रेम और अहिंसा द्वारा एक्य का अनुभव कराना ही साहित्य का श्रेय मानते हैं।

जैनेन्द्र के उपन्यासों के अध्ययन करने के पश्चात ज्ञात होता है कि उनके उपन्यासों में गांधीवादी विचारधारा का समावेश तो है ही साथ ही क्रांतिकारी राजनीतिक वातावरण का वर्णन भी है। प्रेम सत्य और परमात्मा के सम्बन्ध में उनके विचार गांधी जी के विचारों के प्रतिच्छाया हैं। स्वातंत्र्य पूर्व के जैनेन्द्र जी के व्यक्ति-प्रधान उपन्यासों में किसी राजनीतिक समस्या या विचारधारा का निरूपण मुख्य उद्देश्य नहीं है फिर भी पात्रों के सम्पूर्ण कार्य व्यापार एवं परिस्थितिजन्य घटनाओं में जैनेन्द्र जी ने कहीं-कहीं राजनीतिक विचार व्यक्त किये है। जैनेन्द्र गांधीवाद आदर्शो से पूर्णतया प्रभावित है।

सन्दर्भ -

१. डॉ० पीताम्बर सरोदे- आधुनिक हिन्दी उपन्यास में राजनैतिक एवं आर्थिक चेतना, पृ० ५६
२. डॉ० ब्रजभूषण सिंह 'आदर्श'- हिन्दी के राजनीतिक उपन्यासों का अनुशीलन, पृ० २५६
३. डॉ० राजेन्द्र मोहन भटनागर- जैनेन्द्र और उनका साहित्य, पृ० १५९-१६०
४. रघुनाथ झालानी- जैनेन्द्र और उनके उपन्यास, पृ० ४
५. जैनेन्द्र कुमार- साहित्य का श्रेय और प्रेय, पृ० १७४
६. डॉ० ब्रजभूषण सिंह 'आदर्श'- हिन्दी के राजनीतिक उपन्यासों का अनुशीलन, पृ० २५७
७. वही
८. डॉ० अमर सिंह जगराम 'लोधा'- प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक चेतना, पृ० ८६

***

अनुबंध

डॉ.कृष्णा सिंह

सुनो! स्त्रियों...
आज मैं लिखने बैठी थी
कुछ 'दर्द'
तो उसकी जगह 'मर्द' लिख दी।
छली और सतायी गईं स्त्रियां
तो सबने लिखा,
पर छला गया पुरुष
और उसकी भावनाएं
किसी को नहीं दिखा?
सुनो! स्त्रियों....
सभी पुरुष नहीं भागते
यथार्थ में,जिस्मों के पीछे
जानना है तो कोई उनकी
पसंदीदा स्त्री से तो पूछे!
वो भागता है
गहरे प्रेम के पीछे
दर्द समेटे,
तलाशता है
तुम्हारे अंक को, मुख-मयंक को।
सुनो! स्त्रियों....
छद्म-वेश बनाने वाले
कली -कली मंडराते हैं,
करके फूलों से मधुपान
निज पुरुषत्व पर इतराते हैं।
तुम ऐसे पुरुषों से रहना
सावधान!

नारीवाद की सोच को लेकर
कोई पुरुष यदि दस्तक दे,
अंशुमाली- सा रुप बनाकर
पुरुषवाद में ढल जाना।
सुनो! स्त्रियों...
नदियों-सा भटकाव नहीं
कुएं सा ठहराव बनों!
तुम गीत लिखो
तुम छन्द लिखो
प्रणय के सारे प्रबंध लिखो,
और अगर तुम लिख पाओ तो!
स्त्री-पुरुष अनुबंध लिखो।

***